Q1. मानव के सांस्कृतिक विकास का वर्णन करें।

→ सांस्कृतिक विकास का आशय मनुष्य के उन प्रयासों से है जिनके द्वारा मानव स्थाई रूप से एक स्थान पर रह कर अपने स्थानीय व क्षेत्रीय पर्यावरण को अपने अनुकूल बना कर अपने जीवन को अधिक आराम-दायक एवं सुविधा सम्पन्न बनाने का प्रयत्न करता है।

कुछ महोदय ने अपनी पुस्तक 'The flow of energy development in society' में ऊर्जा का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया है और बताया है कि ज्यों-ज्यों मानवीय संस्कृति का विकास हुआ है त्यों-त्यों मानवीय ऊर्जा उपयोग में वृद्धि होती गई है। जैसा की निम्न तालिका से स्पष्ट भी है—

cultural stages of Human	Per man of energy
i) पूरा पाषाण युगिन संस्कृति	2000 kilo calori
ii) पाषाण युगिन संस्कृति	4000 kilo calori
iii) जीवन निर्वाह कृषि आधृत संस्कृति	12,000 kilo calori
iv) औद्योगिक संस्कृति	70,000 kilo calori
v) तकनीकि विकसित देशों की महानगरीय संस्कृति	2,30000 kilo calori

मानवीय संस्कृति में अनादि काल से ही परिवर्तन होता आ रहा है। इस परिवर्तन के फलस्वरूप उसके खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा इत्यादि

में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन को आधार मान कर मानव के सांस्कृतिक विकास को तीन अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है —

(i) प्राचीन संस्कृति (ii) मध्य युगिन संस्कृति (iii) आधुनिक संस्कृति

(i) प्राचीन संस्कृति :- मानव जैसे दिखने वाले प्राणि की उत्पत्ति आज से 2 करोड़ वर्ष पूर्व प्लायोसिन युग में ही हुई गई थी, तभी से मानव का सांस्कृति विकास आरंभ माना जाता है। दीर्घकालिक अवधी के कारण सांस्कृतिक विकास की इस प्राचीन अवस्था को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है —

(a) EOLITHIC :- इस युग को अति पूरा पाषाण काल भी कहा जाता है। गुफाओं में मानव निवास से पूर्व के काल को eolithic कहा गया है। इस काल के लोग छोटे समुहों में खुले आसमान के नीचे रहते थे और खाद्य पदार्थों का संग्रह करते थे, तथा वनस्पति पर निर्भर करते थे। यह पूरा पाषाण काल का समय था।

(b) PALEOLITHIC :- इस काल में मनुष्य ने गुफाओं में रहना प्रारंभ कर दिया था। इस काल में गुफाओं में चित्रकारी के प्रमाण मिलते है। इस काल में कई प्रकार के औजारों के साथ-साथ पत्थर की कुल्हाड़ी का भी प्रयोग होने लगा था। पूर्वि अफ्रिका में मुंयरी संस्कृति इसी काल में विकसित हुई। यह समय मध्य पाषाण युग के नाम से

(c) MESOLITHIC :- जाना जाता है। इसकी अवधी 11 हजार वर्ष की मानी जाती है। अब मानव भोजन संग्रह के साथ-साथ कृषि भी करने लगा था। वह शिकार हेतु धनुष-बाण का प्रयोग भी करने लगा था।

(d) NEOLITHIC :- यह समय नूतन पाषाण काल के नाम से जाना जाता है। इस काल में कृषि, पशुपालन

Scanned with CamScanner

व आवास निर्माण होने लगा था।

(e) **BRONZE AGE** :- इस काल में तांबे व टीन का प्रयोग शुरु हुआ। मानव संगठित हो कर एक स्थान पर बसने लगे। वस्तु-विनिमय का प्रारंभ हुआ। अब लड़ाईयाँ झुण्डों में होने लगी इस संस्कृति के प्रमाण प्राचीन चीन, साइप्रस व यूनान में देखने को मिले हैं।

तांबे व टीन द्वारा निर्मित मिश्र धातु कांसे के नाम पर इस युग को कांस्ययुग भी कहते हैं। इस युग में सांस्कृतिक विकास के विश्व में चार केन्द्र निर्मित हुए :-

(1) दजला फरात की सभ्यता (2) सिंधु घाटी की सभ्यता
(3) मेसोपोटामिया की सभ्यता (4) चीन की सभ्यता

(f) **IRON AGE** :- लोह का उपयोग होने के कारण इस काल में नगरीय संस्कृति का विकास हुआ। जिसका केन्द्र नदी घाटियाँ रही। नदियों के सहारे व्यापार-वाणिज्य का भी विकास हुआ। लेकिन वर्तमान समाज कृषि पर आधृत था। सभ्यताओं का विकास उन्ही नदी की घाटियों में हुआ जो वर्ष भर जलपूरित रहा करती थी।

(g) **MEDITERRANEAN AGE** :- भूमध्यसागरीय संस्कृति का काल 1000 वर्ष पूर्व तक रहा। इस काल में नगरीकरण, व्यापार, वाणिज्य का पर्याप्त विकास हो चुका था यह साम्राज्यों की स्थापना का काल था। इस काल में विकसित चिन्तन विश्व के लिए अमूल्य निधि है। इस काल में मानवीय संस्कृति का चहुँमुखी विकास हुआ।

(ii) **मध्य युगीन संस्कृति** :- सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से मध्य युगीन संस्कृति के भी तीन भाग किए जा सकते हैं :-

(a) **अंधयुग की संस्कृति** :- इसका काल चौथी से चौदहवीं सदी के मध्य है। इस दौरान समाज पर ईसाइ-

Scanned with CamScanner

वाद का प्रभाव था। इस काल के कृषक पशुपालन व मछली पकड़ने का काम भी करते थे।

(b) अरब संस्कृति :- मध्य पूर्व एशिया में विकसित अरब संस्कृति का काल छठी से 14वीं शताब्दी तक था। यह एक धर्म प्रधान संस्कृति थी जिसमें राज्य व धर्म का प्रधान खलिफा होता था। इस संस्कृति ने अपने प्रसार एवं विकास हेतु ~~[illegible]~~ हिंसात्मक रूख अपनाया। यूनान व भारत के सम्पर्क के कारण यहाँ खगोल विद्या का पूरा विकास हुआ। इसके अलावे मानचित्र कला, गृह निर्माण कला, विशिष्ट वेशभूषा, तकनिक आदि का भी भरपूर विकास हुआ।

(c) औपनिवेशिक संस्कृति :- भौगोलिक खोजों, पुनर्जागरण, व व्यापार के विकास के परिणाम स्वरूप वैज्ञानिक चिन्तण का विकास हुआ। इस दौरान अनेक नए क्षेत्रों का पता चला फलतः औपनिवेशिक संस्कृति का विकास हुआ। इस समय इसाई धर्म का विश्व व्यापि प्रसार हुआ। तथा विश्व पर ब्रिटिश संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा।

(iii) नवयुगिन संस्कृति :- औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप विश्व व्यापी जनसम्पर्क का अविर्भाव हुआ फलतः इस महान संस्कृति का उद्भव हुआ। इस काल में उत्पादन व परिवहण के साधनों का विकास हुआ, तथा व्यापार-वाणिज्य में अभूतपूर्व प्रगति हुई। यूरोप से स्थांतरित लोगों ने उत्तर अमेरीका व आस्ट्रेलिया में औद्योगिक संस्कृति का विकास किया। इस समय लोगों के रहन-सहन, खान-पान एवं वेशभूषा में व्यापक परिवर्तन हुआ।

Scanned with CamScanner